

प्यार बांटते साई

प्राणमात्र की पीड़ा हरने वाले साई हरदम कहते, \\\'मैं मानवता की सेवा के लिए ही पैदा हुआ हूँ। मेरा उद्देश्य शरिडी को ऐसा स्थल बनाना है, जहाँ न कोई गरीब होगा, न अमीर, न धनी और न ही नरिधन..।\\\' कोई खाई, कैसी भी दीवार..बाबा की कृपा पाने में बाधा नहीं बनती। बाबा कहते, \\\'मैं शरिडी में रहता हूँ, लेकिन हर शरदधालु के दिल में मुझे ढूँढ सकते हो। एक के और सबके। जो शरदधा रखता है, वह मुझे अपने पास पाता है।\\\'

साई ने कोई भारी-भरकम बात नहीं कही। वे भी वही बोले, जो हर संत ने कहा है, \\\'सबको प्यार करो, क्योंकि मैं सब में हूँ। अगर तुम पशुओं और सभी मनुष्यों को प्रेम करोगे, तो मुझे पाने में कभी असफल नहीं होंगे।\\\' यहां \\\'मैं\\\' का मतलब साई की स्थूल उपस्थिति से नहीं है। साई तो प्रभु के ही अवतार थे और गुरु भी, जो अंधकार से मुक्ति प्रदान करता है। ईश के प्रति भक्ति और साई गुरु के चरणों में शरदधा..यही से तो बनता है, इष्ट से सामीप्य का संयोग।

दैन्यता का नाश करने वाले साई ने स्पष्ट कहा था, \\\'एक बार शरिडी की धरती छू लो, हर कष्ट छूट जाएगा।\\\' बाबा के चमत्कारों की चर्चा बहुत होती है, लेकिन स्वयं साई नश्वर संसार और देह को महत्व नहीं देते थे। भक्तों को उन्होंने सांतवना दी थी, \\\'पार्थवि देह न होगी, तब भी तुम मुझे अपने पास पाओगे।\\\'

अहंकार से मुक्ति और संपूर्ण समर्पण के बिना साई नहीं मिलते। कृपापुंज बाबा कहते हैं, \\\'पहले मेरे पास आओ, खुद को समर्पित करो, फिर देखो..।\\\' वैसे भी, जब तक \\\'मैं\\\' का व्यर्थ भाव नष्ट नहीं होता, प्रभु की कृपा कहां प्राप्त होती है।

साई ने भी चेतावनी दी थी, \\\'एक बार मेरी ओर देखो, निश्चिन्ता-मैं तुम्हारी तरफ देखूंगा।\\\'

1854 में बाबा शरिडी आए और 1918 में देह त्याग दी। चंद दशक में वे सांस्कृतिक-धार्मिक मूल्यों को नई पहचान दे गए। मुस्लिम शासकों के पतन और बर्तानिया हुकूमत की शुरुआत का यह समय सभ्यता के वचिलन की वजह बन सकता था, लेकिन साई सांस्कृतिक दूत बनकर सामने आए। जन-जन की पीड़ा हरी और उन्हें जगाया, प्रेरति कथि युद्ध के लिए। युद्ध किसी शासन से नहीं, कुरीतियों से, अंधकार से और हर तरह की गुलामी से भी! यह सब कुछ मानवमात्र में असीमति साहस का संचार करने के उपक्रम की तरह था। हद्वि, पारसी, मुस्लिम, ईसाई और सखि..हर धर्म और पंथ के लोगों ने साई को आदर्श बनाया और बेशक-उनकी राह पर चले।

दरअसल, साई प्रकाश पुंज थे, जिनोंने धर्म व जात की खाई में गरिने से लोगों को बचाया और एक छत तले इकट्ठा कथि। घोर रूढ़िवादी समय में अलग-अलग जातियों और वर्गों को सामूहिक प्रार्थना करने और साथ बैठकर \\\'चलिम\\\' पीने के लिए प्रेरति कर साई ने सामाजिक जागरूकता का भी काम कथि। वे दक्षिणा में नकद धनराशि मांगते, ताकि भक्त लोभमुक्त हो सकें। उन्हें चमत्कृत करते, जसिसे लोगों की प्रभु के प्रति आस्था दृढ़ हो। आज साई की नश्वर देह भले न हो, लेकिन प्यार बांटने का उनका संदेश असंख्य भक्तों की शरिओं में अब तक दौड़ रहा है।

चण्डीदत्त शुक्ल